प्रथम विश्व युद्ध के बाद यूरोप (1919–1939): संकट, तानाशाही और द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि
1. पेरिस शांति सम्मेलन और वर्साय की संधि (1919)
1919 में पेरिस में विजयी शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका) ने शांति सम्मेलन आयोजित किया।
जर्मनी पर वर्साय की संधि थोप दी गई।
जर्मनी पर भारी युद्ध क्षतिपूर्ति, सेना पर प्रतिबंध तथा क्षेत्रीय हानि लगाई गई।
परिणामस्वरूप जर्मनी में राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ।
2. राष्ट्र संघ (League of Nations)
विश्व शांति बनाए रखने हेतु राष्ट्र संघ की स्थापना।
अमेरिका स्वयं इसमें शामिल नहीं हुआ।
कमजोर संरचना के कारण यह आक्रामक शक्तियों को रोकने में असफल रहा।
3. यूरोप में आर्थिक संकट
1929 की महामंदी (Great Depression) ने पूरी विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया।
बेरोजगारी, महंगाई और सामाजिक असंतोष बढ़ा।
लोकतांत्रिक सरकारें कमजोर हुईं।
4. तानाशाही व्यवस्थाओं का उदय
जर्मनी में नाज़ीवाद (हिटलर)
इटली में फासीवाद (मुसोलिनी)
स्पेन में फ्रैंको की तानाशाही
इन व्यवस्थाओं ने राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और विस्तारवाद को बढ़ावा दिया।
5. द्वितीय विश्व युद्ध की ओर
जर्मनी द्वारा वर्साय की संधि का उल्लंघन
1938 – ऑस्ट्रिया का विलय (Anschluss)
1939 – पोलैंड पर आक्रमण → द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ
👉 निष्कर्ष: 1919–1939 का काल असंतोष, आर्थिक संकट और उग्र राष्ट्रवाद का काल था जिसने द्वितीय विश्व युद्ध की नींव र